लाखी

अन्तोन चेख़व

लाखी

अन्तोन चेखव

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : रु. 25.00

प्रथम संस्करण : 2004
पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

आवरण एवं रेखांकन :
रामबाबू

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

पुस्तक और इसके लेखक के बारे में

उन्नीसवीं शताब्दी के महान रूसी लेखकों की कतार में एक अनुपम दीप्तिमान नाम अन्तोन चेख़ोव का भी है। चेख़ोव की कहानियाँ आज भी पूरी दुनिया की सभी भाषाओं में छपती हैं और चाव के साथ पढ़ी जाती हैं। चेख़ोव की रचनाओं को केवल रूसी ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य की सबसे मूल्यवान धरोहर में शामिल किया जाता है। विश्व साहित्य के प्रायः सभी विद्वान चेख़ोव को अब तक के महानतम कहानीकारों में से एक मानते हैं।

चेख़ोव की कहानियाँ हमें हर तरह की मानवद्रोही प्रवृत्तियों से घृणा करने और उनके विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। वे हमें समझौतापरस्ती और कूपमण्डूकता से ऊपर उठकर बेहतर मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करती हैं। जीवन की कड़वी सच्चाइयों को उघाड़ने और उनकी आलोचना प्रस्तुत करने के मामले में चेख़ोव की कुशलता अतुलनीय है। चेख़ोव कुलीन लोगों के खोखले आडम्बरों, अफ़सरों की धौंस, आम मध्यमवर्गीय लोगों की कायरता एवं दुनियादारी के कटु आलोचक थे और जनतांत्रिक मूल्यों में उनकी आस्था अटूट थी। इसलिए उन्हें एक महान मानवतावादी, यथार्थवादी और जनतंत्रवादी रचनाकार माना जाता है।

महान रचनाकार अपने समय की सच्चाइयों के सभी पहलुओं को अपनी रचनाओं में इसलिए प्रस्तुत करते रहे हैं कि वर्तमान की बुराइयों से लड़कर एक बेहतर भविष्य की रचना की जा सके। बेहतर भविष्य का सपना ही किसी लेखक को महान बनाता है। शायद यही कारण है कि दुनिया के अधिकांश बड़े लेखकों ने बच्चों के बारे में और बच्चों के लिए ज़रूर कुछ न कुछ लिखा है। भविष्य बच्चों का है, वे भविष्य के नागरिक हैं, इसलिए उनके लिए चिन्तित होना, उनके बेहतर संस्कार के लिए सोचना लेखक के लिए स्वाभाविक है। आखिर लेखकों को "मानव-आत्मा का शिल्पी" यूँ ही तो नहीं कहा गया है!

उन्नीसवीं शताब्दी के पिछड़े हुए, रूसी समाज मे आम लोगों का जीवन जिस कष्ट और कंगाली से भरा हुआ था उसमें बच्चों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। चेख़ोव ने स्वयं अपने बारे में एक जगह लिखा है : "मैंने बचपन में बचपन नहीं देखा।" वह एक छोटे से शहर के छोटे से दुकानदार के बेटे थे। छोटी उम्र में ही उन्हें घर का काम करना पड़ता था, पिता की दुकान में हाथ बँटाना पड़ता था, और दुकान ऐसी थी कि वहाँ गर्मियोंमें भी सीलन और ठंड होती थी। इन अभावों ने उनके स्वास्थ्य की जड़ काट दी। महज चवालीस वर्ष की आयु में तपेदिक से उनकी मृत्यु हुई। बच्चों के बारे में चेख़ोव की कहानियाँ प्रेम, करुणा और बाल आत्मा की गहरी समझ से ओतप्रोत हैं। इनमें न केवल दुख की, बल्कि हँसी-खुशी की भी बहुत सी बातें हैं। बचपन में उन्होंने स्वयं बहुत कम खुशी पायी थी, अतः वह भलीभाँति समझते थे कि बच्चों को इस खुशी की कितनी आवश्यकता होती है और अपनी रचनाओं में वे उन्हें इसे प्रदान करने का प्रयत्न करते थे। वह बड़ों का आह्वान करते थे कि बच्चों के साथ उनके सम्बंध "सुबोध सत्य" पर आधारित होने चाहिए। चेख़ोव के मित्र लेखक कुप्रिन ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि किस तरह मृत्यु से कुछ समय पूर्व क्रीमिया में चेख़ोव की एक चार साल की बच्ची से मैत्री हो गयी : "नन्हीं बच्ची और अधेड़ उदास मनुष्य, विख्यात लेखक के बीच एक विशिष्ट, गंभीरता और विश्वास भरी मित्रता के सम्बन्ध स्थापित हो गये। बड़ी देर तक वे दोनों बारामदे में बेंच पर बैठे

रहते थे, चेख़ोव बड़े ध्यान से, एकाग्रचित्त होकर बच्ची की बातें सुनते थे...''

प्रस्तुत कहानी 'लाखी' के अतिरिक्त बच्चों को चेख़ोव की दूसरी कहानियाँ- 'वान्का', 'भगोड़ा', 'स्तेपी', 'लड़के', 'घटना', 'नींद आ रही है' और 'बच्चे' भी बहुत पसन्द हैं। सरल और सुन्दर भाषा में लिखी इन कहानियों में लोगों और जीवन का गहरा ज्ञान है, हल्की उदासी का पुट लिये मृदु ''चेख़ोवी'' हास्य है और है ऐसे जीवन का स्वप्न, जो मानव के जीने योग्य हो, ''अकलुष, सुन्दर और काव्यमय'' हो।

'लाखी' कहानी में चेख़ोव ने एक कुतिया के जीवन को अकारण ही विषय नहीं बनाया है। उन्होंने लिखा था : ''बच्चों के जीवन और यादों में घरेलू जानवरों की भूमिका निस्संदेह हितकर होती है। हममें से कौन ऐसा है जिसे नहीं याद- ताक़तवर, पर उदार कुत्ते, पिंजड़े में मरती चिड़ियाँ और बूढ़ी बिल्लियाँ, जो हमें हमेशा माफ़ करती थीं, जब हम शरारत में उनकी दुम दबाकर उन्हें भयानक पीड़ा पहुँचाते थे? मुझे तो कभी-कभी लगता है कि हमारे घरेलू जीवों में जो सहनशीलता, वफ़ादारी, निष्कपटता और सब कुछ माफ़ करने की भावना पायी जाती है, उसका बच्चे के मनोमस्तिष्क पर जितना प्रबल और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, उतना मास्टर जी की नीरस बातों का नहीं।''

'लाखी' वफ़ादारी की कहानी है। यह एक कुतिया की कहानी है, जो शराबी तरखान लुका और उसके पोते फ़ेद्युश्का की कोठरी में रहती थी। उसे मार भी खानी पड़ती थी और भूख भी सहनी पड़ती थी, पर वह इसे ही अपना घर मानती थी और इन लोगों को अपने क़रीबी लोग। अचानक कुतिया शहर के भीड़-भड़क्के में खो जाती है। जानवरों का तमाशा दिखाने वाला सरकस का कलाकार उसे अपने घर ले जाता है, उसे अच्छा खाना खिलाता है, तरह-तरह के करतब सिखाता है, उसके साथ नेकी और प्यार का बर्ताव करता है। लेकिन कुछ समय बाद कुतिया जब अपने पहले मालिकों को देखती है, तो वह उनके पास भाग जाती है। और सच्चे अर्थों में सुखी महसूस करती है। कहानी पढ़ते हुए हम भी तरखान लुका और बालक फ़ेद्युश्का के साथ खुश होते हैं, क्योंकि कुतिया का लौट आना प्रेम की विजय है, जो न अच्छे खाने से और न मीठी बातों से ख़रीदा जा सकता है।

कहा जाता है कि 'लाखी' में चेख़ोव ने प्रसिद्ध रूसी सरकस कलाकार ब्लादीमिर दूरोव के साथ घटी एक घटना का वर्णन किया है। दूरोव चेख़ोव के मित्र थे। दूरोव ने चाबुक के बजाय, प्रेम, स्नेह और प्रोत्साहन से जानवरों को करतब सिखाने का नया तरीका ईजाद किया था। चेख़ोव खुद भी पशु- पक्षियों से बहुत प्यार करते थे। उनके घर में हमेशा कई पशु- पक्षी रहते थे। इनमें डेक्शंड नस्ल के कुत्ते ब्रोम और ख़ीना थे, दोगले पिल्ले लाखी और बेलालोबी थे और एक सारस भी था। चेख़ोव सरकस के भी काफ़ी शौक़ीन थे।

'लाखी' कहानी पहली बार 'नोवये व्रेम्या' अखबार में 25 दिसम्बर 1887 को छपी। पाँच वर्ष बाद यह एक पुस्तक के रूप में छपी और अत्यन्त लोकप्रिय हुई। अपने भाई को लिखे पत्र में चेख़ोव ने मज़ाकिया अंदाज़ में लिखा था : ''खाने के समय... बच्चे एकटक मुझे देखते रहते हैं और इस इंतजार में रहते हैं कि मैं कोई बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण बात कहूँगा। उनके विचार में मैं मेधावी हूँ, क्योंकि मैंने 'लाखी की कहानी लिखी है।''

चेख़ोव के जीवन काल 1860-1904 में 'लाखी' के दस संस्करण छपे। आज तक यह रूसी बच्चों की सबसे प्रिय पुस्तकों में से एक है।

लाखी

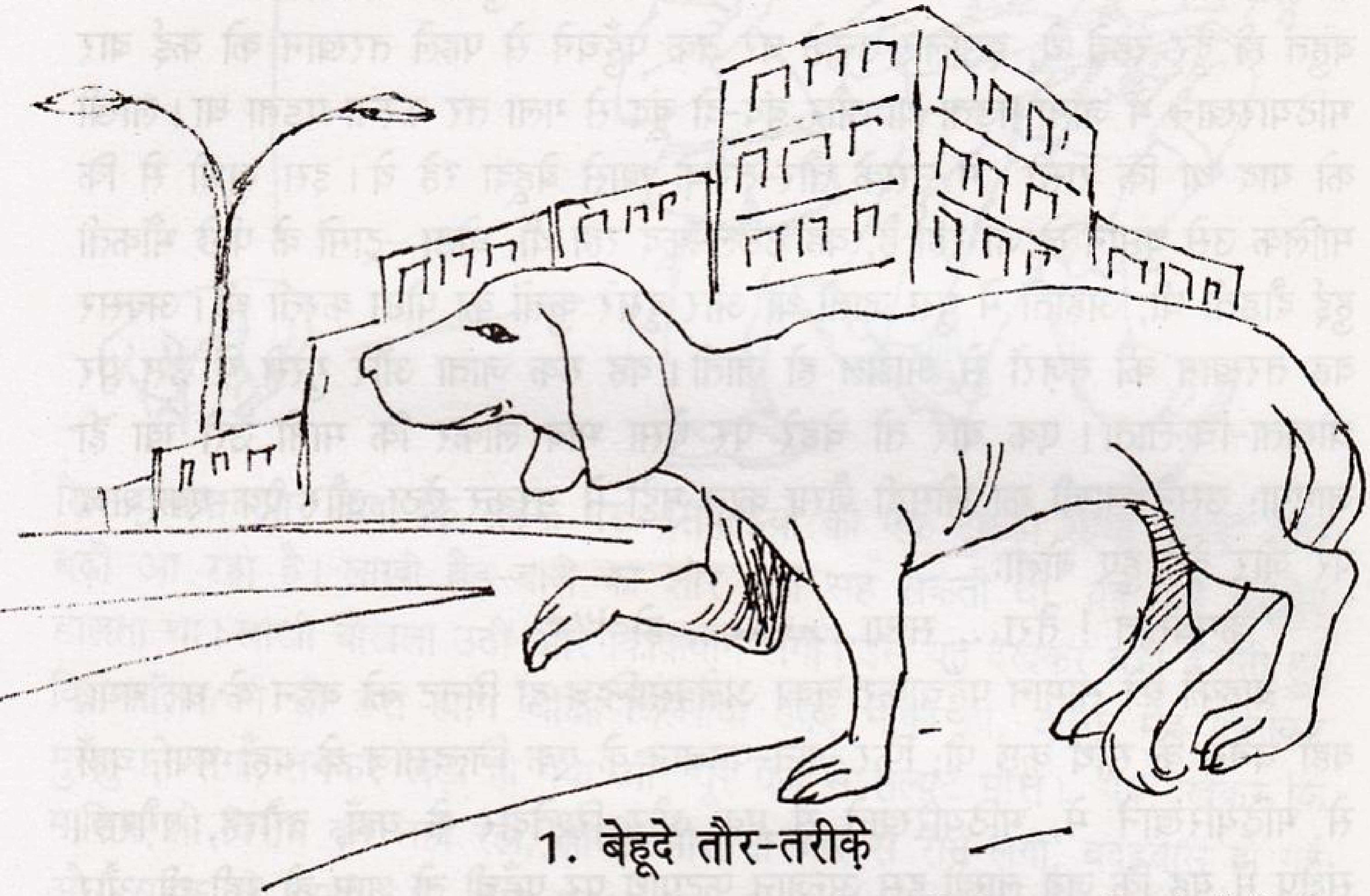

1. बेहूदे तौर-तरीके

दोगली नस्ल की छोटी सी सुर्खी कुतिया, जिसकी थूथनी बिल्कुल लोमड़ी जैसी थी, फुटपाथ पर आगे-पीछे दौड़ रही थी और बेचैन सी इधर-उधर देख रही थी। कभी-कभी वह रुक जाती, रोते हुए ठंड से अकड़ा एक पंजा या दूसरा पंजा ऊपर उठाती और यह समझने की कोशिश करती कि आख़िर वह भटक कैसे गई।

उसे अच्छी तरह यह याद था कि उसने दिन कैसे बिताया और कैसे आख़िर में इस अन्जाने फुटपाथ पर आ पहुँची।

दिन यों शुरू हुआ कि उसके मालिक लुका अलेक्सान्द्रिच नाम के तरखान ने कनटोप पहना, लाल कपड़े में लपेट कर लकड़ी की कोई चीज बगल में दबाई और

चिल्लाया :

"लाखी, चल !"

अपना नाम सुनकर दोगली कुतिया ठिये के नीचे से निकली, जहाँ वह छीलन पर सो रही थी, जिस्म तोड़ा और मालिक के पीछे हो ली। लुका अलेक्सान्द्रिच के ग्राहक बहुत ही दूर रहते थे, इसलिए उनके घर तक पहुँचने से पहले तरखान को कई बार भठियारखाने में जाना पड़ता था और बूंद-दो बूंद से गला तर करना पड़ता था। लाखी को याद था कि रास्ते में उसके तौर-तरीक़े खासे बेहूदा रहे थे। इस खुशी से कि मालिक उसे घुमाने ले जा रहा है, वह उछल-कूद रही थी, घोड़ा -ट्रामों के पीछे भौंकती हुई दौड़ती थी, अहातों में घुस जाती थी और दूसरे कुत्तों का पीछा करती थी। अक्सर वह तरखान की नज़रों से ओझल हो जाती। वह रुक जाता और गुस्से में उस पर चीखता-चिल्लाता। एक बार तो चेहरे पर ऐसा भाव लाकर कि मानो उसे खा ही जाएगा; उसने लाखी का लोमड़ी जैसा कान मुट्ठी में भरकर ऐंठा और एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बोलाः

"कमबख़त ! तेरा... सत्या... नास... हो !"

ग्राहकों को सामान पहुँचाकर लुका अलेक्सान्द्रिच दो मिनट को बहन के घर गया, वहाँ चबैने के साथ कुछ पी; फिर जान-पहचान के एक जिल्दसाज़ के यहाँ गया, वहाँ से भठियारख़ाने में, भठियारख़ाने से एक और रिश्तेदार के यहाँ, वग़ैरह, वग़ैरह। संक्षेप में यह कि जब लाखी इस अन्जान फुटपाथ पर पहुँची तो शाम हो रही थी और तरखान नशे में धुत्त था। वह जोर-जोर से हाथ हिलाते हुए आहें भर रहा था और बड़बड़ा रहा था :

"पाप में जन्मा माँ ने गरभ में मेरे ! ओह, हमारे पाप ! पाप ! अब चले जाते हैं सड़क पर , बत्तियाँ देख रहें हैं, मर जाएँगे, तो नरक की आग में जलेंगे।"

या फिर वह मस्ती में आ जाता, लाखी को अपने पास बुलाता और उसे कहताः

"अरी लाखी, तू तो बस एक जानवर है और कुछ नहीं। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौड़ी का बढ़ई।"

जब वह उससे यों बातें कर रहा था, तभी अचानक बैंड बजने लगा। लाखी ने

सिर घुमाया और देखा कि सड़क पर सिपाहियों की एक टुकड़ी सीधी उसकी ओर बढ़ी आ रही है। लाखी बैंड-बाजे का शोर नहीं सह सकती थी, वह उसे झिंझोड़ डालता था। लाखी बौखला उठी और किकियाने लगी। उसे यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि मालिक न तो डरा ही,न चीखा-चिल्लाया और भौंका ही, बल्कि मुँह फैलाकर मुस्कुराने लगा, तनकर खड़ा हो गया और पूरे पँजे से सल्यूट मारा। यह देखकर कि मालिक तो विरोध कर नहीं रहा, लाखी और भी जोर से रोने लगी, बदहवास हो गई और सड़क के दूसरी ओर भाग गई।

जब उसके होश ठिकाने आए, तो बैंड नहीं बज रहा था और सिपाही भी नहीं थे। वह सड़क पार करके उस जगह आयी जहाँ उसने मालिक को छोड़ा था, पर मालिक वहाँ था ही नहीं। वह आगे दौड़ी, फिर पीछे, एक बार फिर सड़क पार की, पर मालिक तो मानो जमीन में समा गया था। लाखी फुटपाथ सूँघने लगी, ताकि मालिक की गँध से पता लगा सके कि वह किधर गया, पर कोई कमबख़त इससे पहले रबड़ के नये गैलोश* पहने उधर से गुजर गया था और अब सारी भीनी महकें रबड़ की बू से दब गई थीं, सो लाखी को कुछ पता न चल पा रहा था।

---

* बारिश के दिनों में चमड़े के जूतों के ऊपर पहने जाने वाली रबड़ की जूतियाँ –सं.

लाखी आगे-पीछे दौड़ रही थी, पर मालिक नहीं मिल पा रहा था और उधर अँधेरा होता जा रहा था। सड़क के दोनों ओर बत्तियाँ जल गईं, घरों की खिड़कियों में भी रोशनी हो गई। हिम के बड़े-बड़े फाहे गिर रहे थे और उनसे सड़क, घोड़ों की पीठें और कोचवानों की टोपियाँ सभी कुछ सफ़ेद रंग में रंगा जा रहा था, हवा में अँधेरा जितना गहराता जा रहा था, चारों ओर की वस्तुएँ, उतनी ही सफ़ेद होती जा रही थीं। लाखी के पास से, उसकी नजरों के सामने अँधेरा करते हुए, उसे ठुकराते हुए अनजान ग्राहक लगातार आ जा रहे थे। (लाखी सभी इन्सानों को दो बिल्कुल असमान हिस्सों में बाँटती थी: एक थे मालिक और दूसरे ग्राहक। दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर था: मालिकों को उसे मारने-पीटने का हक़ था और ग्राहकों को वह खुद काटने का अधिकार रखती थी।) सारे ग्राहक कहीं जाने की जल्दी में थे और कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था।

जब बिल्कुल अँधेरा छा गया, तो लाखी हताश और भयभीत हो गई। वह किसी घर के दरवाजे से सटकर बैठ गई और जोर-जोर से रोने लगी। लुका अलेक्सान्द्रिच के साथ सारे दिन की इस ''यात्रा'' ने उसे थका डाला था, उसके कान और पँजे ठंड से अकड़ रहे थे और साथ ही उसे बड़े जोरों की भूख लगी थी। सारे दिन में सिर्फ दो बार उसके मुँह में कुछ गया था : जिल्दसाज के यहाँ उसने थोड़ी सी लेई खाई थी और एक भठियारखाने में उसे सलामी का छिलका मिल गया था-बस और कुछ नहीं। अगर वह इंसान होती तो शायद सोचती :

''नहीं, ऐसे जीना नामुमकिन है! इससे तो गोली मार लेना बेहतर है।''

2. रहस्यमय अजनबी

पर वह कुछ नहीं सोच रही थी और बस रोती जा रही थी। जब हिम के फाहों से उसकी सारी पीठ और सिर ढक गये और वह निढाल होकर ऊँघने लगी, तभी दरवाजे की चिटकनी खुली, चरमराहट हुई और दरवाजा लाखी की बगल में आ लगा।

वह उछलकर खड़ी हो गई। खुले दरवाजे में से कोई आदमी निकला, जो ग्राहकों की श्रेणी का था। लाखी चिचियाई थी और उसके पैरों तले आ गई थी, इसलिए वह उसकी ओर ध्यान दिये बिना नहीं रह सकता था। वह लाखी पर झुका और पूछने लगा :

"अरे तू कहाँ से आई? चोट लग गई क्या? बेचारी कुतिया... अच्छा नाराज मत हो... मेरे से गलती हो गई।"

लाखी ने बरौनियों पर लटक रहे हिमकणों के पीछे से अजनबी की ओर देखा और अपने सामने एक नाटे से, गोल-मटोल आदमी को पाया। उसकी दाढ़ी-मूँछे साफ मुंडी हुई थीं और चेहरा भरा हुआ था। सिर पर वह ऊँचा टोप पहने था और उसके ओवरकोट के बटन खुले थे। उँगलियों से उसकी पीठ पर गिरा हिम झाड़ते हुए वह कहता जा रहा था:

"अरे, तू किकियाती क्यों है? तेरा मालिक कहाँ है? लगता है तू खो गई? बेचारी कुतिया! अब हम क्या करें?"

अजनबी की आवाज में अपनेपन और स्नेह का आभास पाकर लाखी ने उसका हाथ चाटा तथा और भी अधिक दयनीय स्वर में किकियाने लगी।

"है तो तू बड़ी प्यारी!" अजनबी ने कहा। 'बिल्कुल लोमड़ी है! ... अच्छा, तो क्या करें? चल मेरे साथ ही चल शायद तू किसी काम आ जाए ...फच-फच!"

उसने लाखी को पुचकारा और हाथ से इशारा किया, जिसका सिर्फ एक मतलब हो सकता था: "चल!" और लाखी चल दी।

यही कोई आधे घंटे बाद वह एक बड़े से कमरे में बैठी थी और सिर एक ओर को झुकाए कौतूहल के साथ अजनबी को देख रही थी, जो मेज पर खाना खा रहा था। खाना खाते हुए वह लाखी की ओर भी कुछ टुकड़े फेंकता जा रहा था... पहले उसने उसे रोटी दी और पनीर का हरा छिलका दिया, फिर गोश्त की बोटी, आधा समोसा, मुर्गी की हड्डियाँ। लाखी भूख के मारे यह सब इतनी जल्दी खा गई कि स्वाद का उसे पता ही नहीं चला। जितना ज्यादा वह खाती जा रही थी, उतनी ही उसकी भूख तेज हो रही थी।

उसे इस तरह टूट-टूट कर खाते देखकर अजनबी कह रहा था: "ओह, तेरे

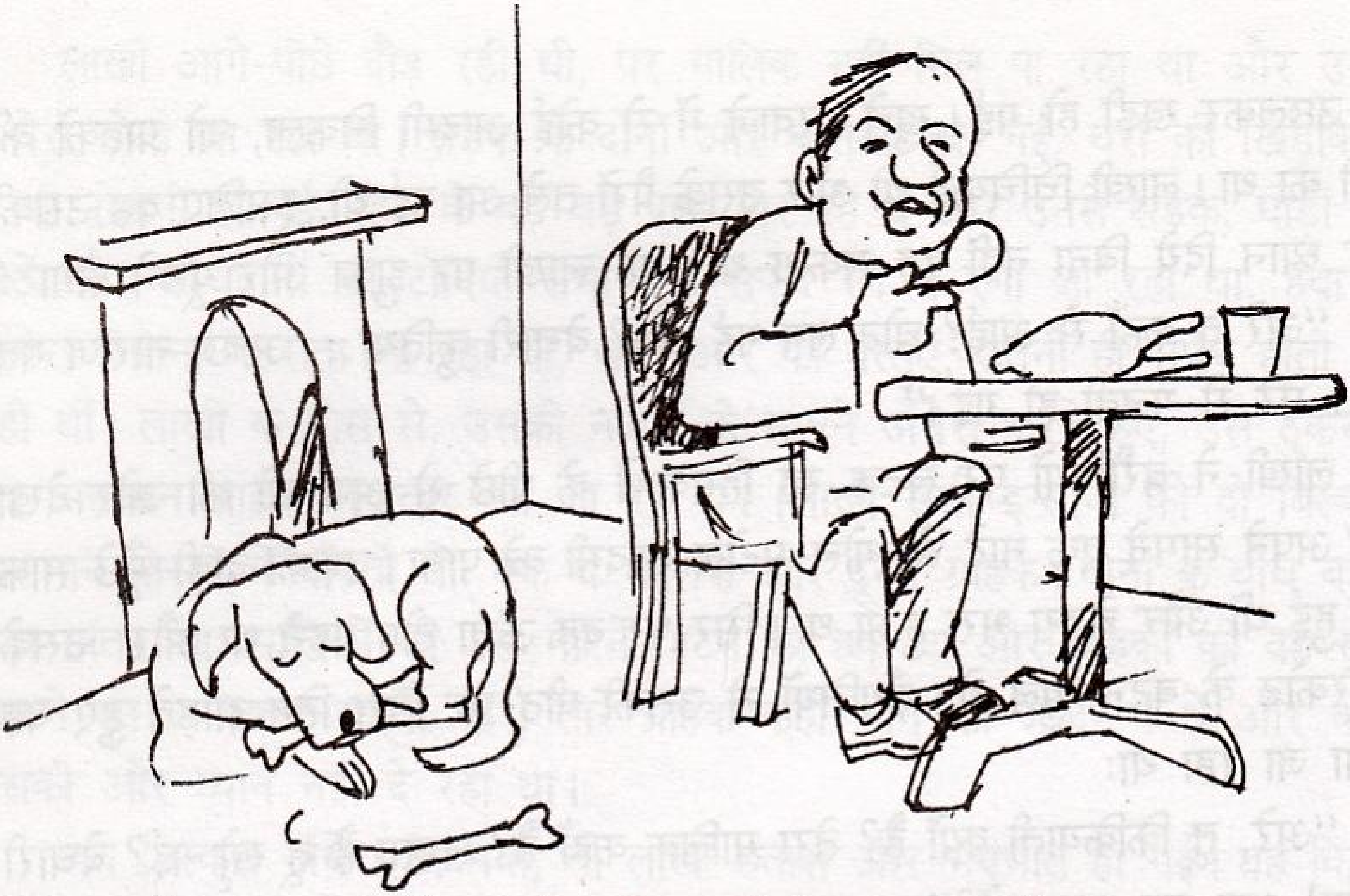

मालिक तुझे खाना नहीं देते लगते ! निरा हड्डियों का पुतला है तू।"

लाखी ने बहुत खा लिया था। पर उसका पेट नहीं भरा था, बस खाने का खुमार चढ़ गया था। खाने के बाद वह कमरे के बीचोंबीच टाँगे फैलाकर लेट गई। उसके सारे शरीर में मीठी कसक सी हो रही थी। वह दुम हिलाने लगी। उधर उसका नया मालिक आरामकुर्सी में बैठा सिगार पी रहा था और इधर वह दुम हिलाते हुए यह मसला हल कर रही थी कि कहाँ रहना बेहतर है – अजनबी के यहाँ या तरखान के घर ? अजनबी के घर में कोई खास चीज नहीं है, आराम कुर्सियों, सोफे, लैम्प और कालीनों के अलावा उसके कमरे में कुछ भी नहीं है, कमरा खाली-खाली लगता है, तरखान का सारा घर चीजों से भरा हुआ हैः उसके पास मेज है, ठिया है, छीलन का ढेर है, रंदे, रुखानियाँ, आरियाँ हैं, पिंजड़े में चिड़िया है और लकड़ी का छोटा सा टब है... अजनबी के घर में किसी चीज की गंध नहीं आती, तरखान के घर में सदा धूल छायी रहती है और सरेस, वार्निश और छीलनों की बढ़िया गंध आती है। पर अजनबी के यहाँ एक बहुत अच्छी बात है – वह खाने को बहुत कुछ देता है और इन्साफ़ से यह भी कहना चाहिए कि जब लाखी उसके सामने मेज तले बैठी थी और गदगद सी

उसकी ओर देख रही थी, तो उसने एक बार भी उसे ठोकर नहीं मारी, पैर नहीं पटके और एक बार भी नहीं चिल्लायाः "धुत! कमबख़्त कहीं की!"

सिगार पीकर नया मालिक बाहर गया और दो मिनट में ही छोटा सा गद्दा उठाए लौट आया।

"ऐ, कुतिया, इधर आ," सोफे के पास कोने में गद्दा रखते हुए उसने कहा। "लेट जा यहाँ। सो जा!"

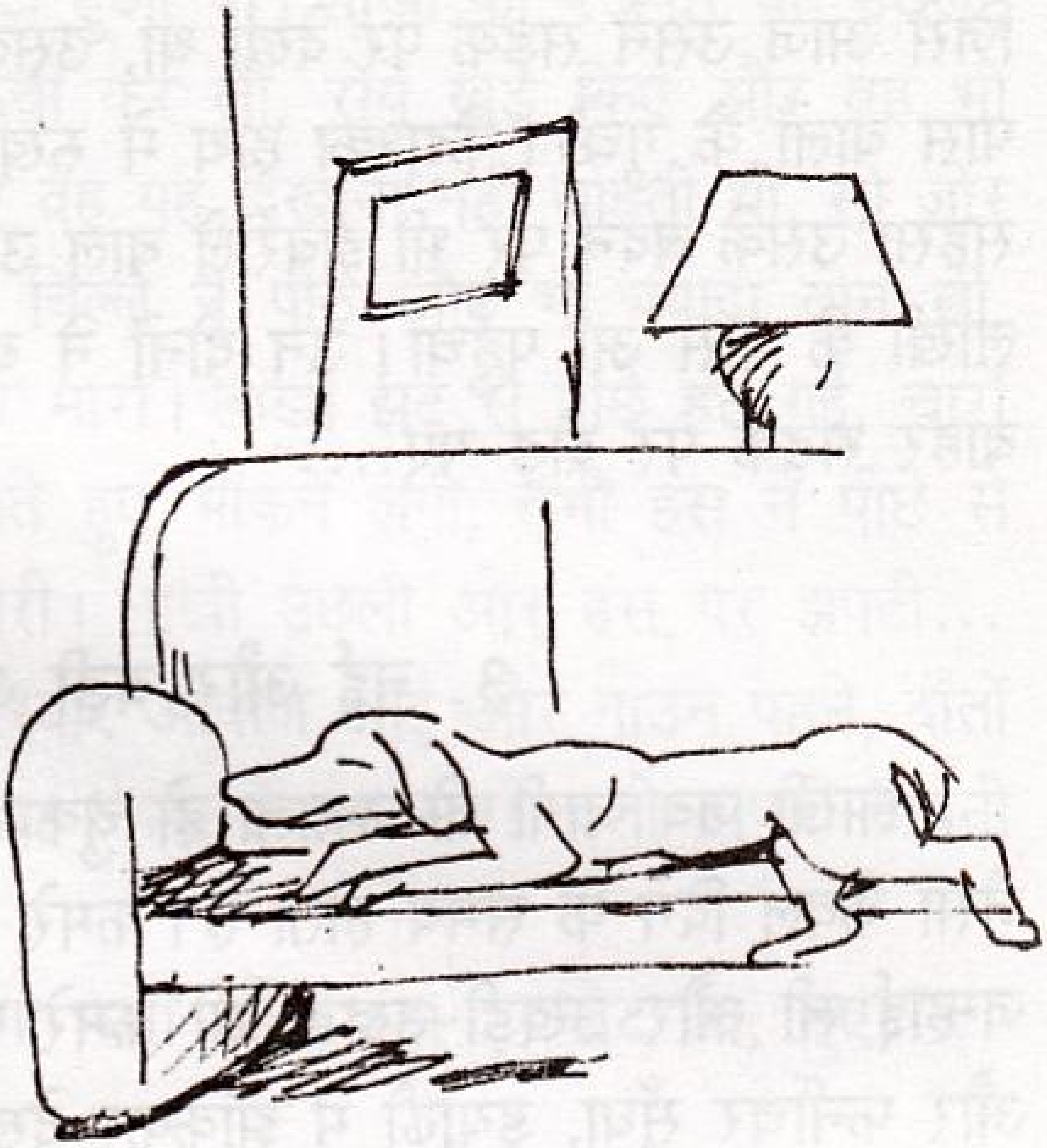

फिर उसने लैम्प बुझा दिया और बाहर चला गया। लाखी ने गद्दे पर लेटकर आँखे मूँद लीं। बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज आई, वह भी जवाब में भौंकना चाहती थी, पर अचानक उसके मन पर गहरी उदासी छा गई। उसे लुका अलेक्सान्द्रिच और उसके बेटे फ़ेद्युश्का की, ठिये तले आरामदेह जगह की याद हो आई... उसे याद आया कि जाड़ों की लंबी शामों में, जब तरखान रंदा चला रहा होता था या ऊँचे-ऊँचे अखबार पढ़ता था तो फ़ेद्युश्का अक्सर उसके साथ खेला करता था... वह उसकी पिछली टाँगें पकड़कर उसे ठिये के नीचे से निकाल लेता और ऐसे-ऐसे तमाशे करता कि लाखी की आँखों के आगे तितरियाँ नाचने लगतीं और सारे जोड़ दुखते। वह उसे पिछले पैरों पर चलाता, उसकी घंटी बनाता, यानी उसकी दुम पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाता, जिससे लाखी चीखती और भौंकती; वह उसे तंबाकू सुँघाता... सबसे दर्दनाक यह खेल था : फ़ेद्युश्का गोश्त की बोटी को धागे में बाँध देता और लाखी को देता, जब लाखी बोटी निगल जाती, तो वह ठहाके मारता हुआ उसके पेट में से बोटी निकाल लेता। यादें जितनी तीखी होती जा रही थीं, उतने ही उदास स्वर में वह जोर-जोर से किकिया रही थी।

परन्तु शीघ्र ही उसकी उदासी पर थकावट और गर्माहट छा गई ... लाखी को

नींद आने लगी। उसकी कल्पना में कुत्ते दौड़ने लगे; वह झबरीला कुत्ता भी उनमें था, जिसे आज उसने सड़क पर देखा था, उसकी आँख पर सफ़ेद दाग़ था, और नाक के पास बालों के गुच्छे। फ़ेद्युश्का हाथ में रुखानी उठाए उस कुत्ते का पीछा करने लगा। सहसा उसके बदन पर भी झबरीले बाल उग आए, वह खुशी-खुशी भौंकने लगा और लाखी के पास आ पहुँचा। उन दोनों ने बड़े प्रेम से एक दूसरे की नाक सूंघी और बाहर सड़क पर दौड़ गए...

3. नई और बड़ी अच्छी जान-पहचान

लाखी जब जागी तो उजाला हो चुका था और बाहर से ऐसा शोर आ रहा था, जैसा केवल दिन के समय होता है। कमरे में कोई भी न था। लाखी ने जिस्म तोड़ा, जम्हाई ली और उखड़ी-उखड़ी सी कमरे का चक्कर लगाने लगी। उसने सारे कोने और फर्नीचर सूँघा, ड्योढ़ी में झाँककर देखा पर वहाँ कोई दिलचस्प चीज न मिली। ड्योढ़ी के दरवाजे के अलावा कमरे में एक और दरवाजा भी था। कुछ देर सोचने के बाद लाखी ने दोनों पंजो से उसे खरोंचा, खोला और अगले कमरे में चली गई। यहाँ एक पलंग पर फ़लेलिन का कंबल ओढ़े ग्राहक सो रहा था। वह पहचान गई कि यह कल वाला अजनबी ही है।

वह गुर्राने लगी, पर फिर कल का खाना याद करके दुम हिलाने और सूँघने लगी।

उसने अजनबी के कपड़े और बूट सूँघे और यह पाया कि उनसे घोड़े की तेज गँध आती है। इस कमरे में एक और दरवाजा था, वह भी भिड़ा हुआ था। लाखी ने उसे खरोंचा छाती से उस पर जोर डाला और खोल लिया। दरवाजा खुलते ही वहाँ से बड़ी अजीब सी गँध आई, जिससे लाखी एकदम चौकन्नी हो गई। उसे लग रहा था कि कोई अप्रिय घटना होगी। गुर्राते और इधर-उधर झाँकते हुए वह मैले दीवारी कागज वाले छोटे से कमरे में घुसी और डर के मारे फौरन पीछे हट गई। उसने एक बिल्कुल ही अप्रत्याशित और भयावह दृश्य देखा था। फर्श तक गर्दन और सिर झुकाए, पँख फैलाए एक हल्का सुरमई हँस फुफकारता हुआ सीधा उसकी ओर बढ़ता आ रहा

था। एक ओर को गद्दे पर सफेद बिल्ला लेटा हुआ था। लाखी को देखकर वह उछला, उसने पीठ कमान की तरह तानी, दुम ऊँची कर ली, रोयें खड़े किए और वह भी फुफकारने लगा। कुतिया खासी डर गई, पर वह यह दिखाना नहीं चाहती थी, सो जोर से भौंकती हुई बिल्ले की ओर लपकी... बिल्ले ने पीठ और भी ज्यादा तान ली, फुफकार भरी और पंजा लाखी के सिर पर मारा। लाखी झट से पीछे हट गई, चारों पैरों पर बैठ गई और जोर-जोर से चीखते हुए भौंकने लगी; तभी हंस ने पीछे से आकर अपनी चोंच उसकी पीठ पर दे मारी। लाखी उछली और हंस पर झपटी...

"क्या हो रहा है यह?" गुस्से भरी जोरदार आवाज आई और गाउन पहने, दाँतों में सिगार दबाए अजनबी कमरे में आ गया। "क्या है यह सब? चलो अपनी-अपनी जगह।"

बिल्ले के पास आकर उसने एक ठोंगा मारा और कहा : "लेट जा, मुए!"

हंस की ओर मुड़कर वह चिल्लाया :

"इवान इवानिच, चलो अपनी जगह!"

बिल्ले ने चुपके से अपने गद्दे पर लेटकर आँखे मूँद लीं। उसकी थूथनी और मूंछो के भाव से लग रहा था कि वह खुद भी इस बात पर खुश नहीं है कि ताव में आकर लड़ने लगा। लाखी रोनी सी होकर किकियाने लगी, हँस ने अपनी गर्दन तान ली और जल्दी-जल्दी कुछ बोलने लगा। वह बड़े जोश से और साफ-साफ कुछ कह रहा था, पर बिल्कुल कुछ भी समझ में न आता था।

"अच्छा, अच्छा! " मालिक ने जम्हाई लेते हुए कहा। "मिल-जुल कर रहना चाहिये।" उसने लाखी को सहलाया और बोलता गया : "तू डर नहीं... यहाँ सब अच्छे हैं, कोई तुझे कुछ नहीं कहेगा। ठहर, तुझे हम पुकारेंगे कैसे? नाम के बिना तो काम नहीं चल सकता। "

अजनबी थोड़ी देर सोचता रहा फिर बोला :

"हुँ, तेरा नाम होगा... मौसी। समझी? मौसी!"

और कुछ बार "मौसी, मौसी" कहकर वह बाहर चला गया। लाखी बैठ गई और देखने लगी। बिल्ला जरा भी हिले-डुले बिना गद्दे पर बैठा हुआ था और सोने का

बहाना कर रहा था। हंस गर्दन तानकर और एक ही जगह पर पैर बदलते हुए बड़े जोर-शोर से कुछ कहता जा रहा था। वह शायद बड़ा अक्लमंद हंस था; लम्बा सा भाषण देकर वह शान से पीछे हट जाता और ऐसे देखता मानो खुद ही अपने भाषण पर मुग्ध हो रहा हो... उसकी बातें सुनकर और गुर्राहट से उसका जवाब देकर लाखी सारे कोने सूंघने लगी। एक कोने में छोटा सा टब रखा था, जिसमें उसे भीगे हुए मटर के दाने और रोटी के टुकड़े दिखे। उसने मटर चखा – अच्छा नहीं लगा, गीली रोटी के टुकड़े चखे – और खाने लगी। हंस ने इस बात का जरा भी बुरा नहीं माना कि अनजान कुतिया उसका खाना खा रही है, उल्टे वह और भी जोर-शोर से बोलने लगा और अपना विश्वास दिखाने के लिए खुद भी वहाँ चला आया और मटर के कुछ दाने खा लिए।

4. अजूबे ही अजूबे

थोड़ी देर बाद अजनबी फिर आया और अपने साथ एक अजीब सी चीज लाया, जो दर जैसी थी। लकड़ी के जैसे-तैसे बने इस दर की आड़ी डंडी पर एक घंटी लटक रही थी और पिस्तौल बँधी हुई थी; घंटी की लटकन और पिस्तौल की लिबलिबी से डोरी बँधी हुई थी।अजनबी ने इस दर को कमरे के बीचोंबीच रख दिया, बड़ी देर तक कुछ खोलता, बाँधता रहा, फिर हंस की ओर देखकर बोला :

"इवान इवानिच, आइए!"

हंस उसके पास गया और प्रतीक्षा की मुद्रा में खड़ा हो गया।

"अच्छा, जी," अजनबी बोला, "तो शुरू से शुरू करते हैं। सबसे पहले झुककर आदाब बजाओ। जल्दी से!"

इवान इवानिच ने गर्दन तानी, चारों ओर सिर झुकाने लगा और पंजा पीछे उठा लिया।

"शाबाश... अब ढेर हो जाओ!"

हंस पीठ के बल लेट गया और पंजे ऊपर उठा लिए। कुछ और ऐसे ही मामूली

से तमाशों के बाद अजनबी ने सहसा अपना सिर पकड़ लिया, चेहरे पर, डर का भाव ले आया और चिल्लाया :

"आग ! आग ! बचाओ !"

इवान इवानिच दौड़ा-दौड़ा दर के पास गया, डोरी चोंच में पकड़ी और घंटी बजाने लगा।

अजनबी बहुत खुश हुआ। उसने हंस की गर्दन सहलाई और बोला :

"शाबाश, इवान इवानिच ! अच्छा, तुम यह कल्पना करो कि तुम जौहरी हो और हीरे-जवाहरात बेचते हो। अब यह कल्पना करो कि तुम दुकान पर आए और देखा वहाँ चोर घुस आए हैं। ऐसी हालत में तुम क्या करोगे?"

हंस ने दूसरी डोरी चोंच में पकड़ी और खींच दी, तभी जोरदार धमाका हुआ। लाखी को घंटी की आवाज बड़ी अच्छी लगी थी और धमाके से तो वह बावली हो उठी, दर के चारों ओर दौड़ने और भौंकने लगी।

"मौसी, चलो अपनी जगह!" अजनबी चिल्लाया। "चुप रहो!"

इवान इवानिच का काम इस धमाके के साथ ही खत्म नहीं हुआ। इसके बाद घंटे भर तक अजनबी उसे अपने इर्द-गिर्द बागडोर पर दौड़ाता रहा और कोड़ा सटकारता रहा। हंस को दौड़ते हुए बाधाओं के ऊपर से और छल्ले में से कूदना पड़ता था, सीख़पा होना पड़ता था, यानी दुम पर बैठकर पंजे हवा में हिलाने पड़ते थे। लाखी टकटकी लगाए इवान इवानिच को देख रही थी, वह खुशी से भौंकने लगती और उसके पीछे दौड़ने लगती। आखिर हंस को भी और खुद को भी थकाकर अजनबी ने माथे से पसीना पोंछा और आवाज दी :

"मार्या, ज़रा ख़व्रोन्या इवानव्ना को बुलाओ इधर!"

थोड़ी देर में घुरघुराहट सुनायी दी... लाखी गुर्राने लगी, बड़ी बहादुर सी बन गई, पर फिर भी अजनबी के पास आ गई। दरवाजा खुला, किसी बुढ़िया ने अंदर झाँक कर देखा और कुछ कहकर एक काले से, बहुत ही बदसूरत सूअर को अंदर घुसेड़ दिया। लाखी की गुर्राहट की जरा भी परवाह न करते हुए सूअर ने अपना थूथना ऊपर उठाया। लगता था कि वह अपने मालिक, बिल्ले और इवान इवानिच को देखकर बड़ा

खुश है। उसने बिल्ले के पास आकर अपना थूथना उसके पेट में लगाया, फिर हंस से कुछ बातें करने लगा। यह सब वह जिस तरह कर रहा था और जैसे अपनी दुम हिला रहा था, उससे लगता था कि वह नेक स्वभाव का है। लाखी ने तुरंत ही भाँप लिया कि ऐसों पर गुर्राना और भौंकना बेकार है।

मालिक ने दर हटाया और चिल्लाया :

"फ़्योदर तिमफ़ेइच, पधारिए!"

बिल्ला उठा, अलसाहट के साथ जिस्म तोड़ा और अनमना सा, मानो अहसान करता हुआ सूअर के पास आ गया।

"तो चलो, मिस्री पिरामिड से शुरू करें," मालिक बोला।

वह बड़ी देर तक कुछ समझाता रहा, फिर बोला: "एक... दो... तीन... " उसके तीन कहते ही इवान इवानिच ने पंख फड़फड़ाए और सूअर की पीठ पर जा सवार हुआ... जब वह पंखों और गर्दन से संतुलन करता हुआ सूअर के कड़े बालों वाली पीठ पर टिक गया, तब फ़्योदर तिमफ़ेइच सुस्ताया हुआ सा, यह दिखाते हुए कि उसे इस सब तमाशे से कुछ नहीं लेना-देना है, कि यह सब बेकार की बातें हैं, सूअर की पीठ पर चढ़ गया, फिर अनिच्छा से हंस पर जा चढ़ा और पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया। इसे ही अजनबी मिस्री पिरामिड कहता था। लाखी बेहद खुश हो उठी, किकियाई, पर तभी बिल्ले ने जम्हाई ली और संतुलन खो बैठने से वह हंस की पीठ से गिर गया। इवान इवानिच भी डगमगाया और गिर पड़ा। अजनबी चिल्लाने और हाथ झटकने लगा, फिर से कुंछ समझाने लगा। घंटे भर तक पिरामिड बनाते रहने के बाद अथक मालिक इवान इवानिच को बिल्ले की सवारी करना सिखाने लगा, फिर बिल्ले को सिगार पीना, इत्यादि।

आख़िर अजनबी ने माथे से पसीना पोंछा और बाहर निकल गया। और इस तरह यह पाठ खत्म हुआ। फ़्योदर तिमफ़ेइच ने घिन के साथ फुफकार भरी, गद्दे पर लेट गया और आँखें मूँद लीं। इवान इवानिच टब की ओर चल दिया और सूअर को बुढ़िया ले गई। अनगिनत नई छापों के कारण दिन बीतते पता भी न चला। शाम को लाखी का गद्दा मैले दीवारी कागज वाले कमरे में रख दिया गया और रात उसने

फ़्योदर तिमफ़ेइच तथा हंस के साथ काटी।

5. वाह ! क्या कमाल है !

एक महीना बीत गया।

लाखी इस बात की आदी हो गई थी कि रोज शाम को उसे मज़ेदार खाना मिलता था और मौसी कहकर पुकारा जाता था। अजनबी और नए साथियों की भी वह आदी हो गई थी। जिंदगी बड़े मज़े से बीत रही थी।

सभी दिन एक ही तरह से शुरू होते थे। आम तौर पर इवान इवानिच सबसे पहले जागता था। वह तुरन्त ही मौसी या बिल्ले के पास जाता, गर्दन तानकर बड़े जोर-शोर से कुछ कहने लगता, पर पहले की भाँति उसकी कोई बात समझ में न आती। कभी-कभी वह अपनी लंबी गर्दन ऊपर उठाकर एक लंबे एकालाप करता। पहले कुछ दिन तक तो लाखी यह सोचती रही कि वह बहुत अक्लमंद है, इसलिए इतना बोलता है, पर थोड़े दिन बीतने पर उसके मन में हंस के लिए कोई आदर न रहा। अब जब वह अपना लंबा भाषण झाड़ता हुआ उसके पास आता, तो वह दुम नहीं हिलाती थी, बल्कि उसके साथ निरे बक्की जैसा ही बर्ताव करती थी, जो सबको तंग करता है, सोने नहीं देता। उसका कोई लिहाज किए बिना वह गुर्रा कर उसे झाड़ देती थी।

जनाब फ़्योदर तिमफ़ेइच के तौर-तरीक़े बिल्कुल ही और थे। वह सुबह जागने पर कोई आवाज़ नहीं करता था, हिलता-डुलता भी नहीं था और न आँखें ही खोलता था। वह तो बड़ी खुशी से जागता ही न, क्योंकि साफ़ लगता था कि उसे इस जिंदगी से कोई लगाव ही नहीं है। किसी बात में उसकी दिलचस्पी न थी, हर चीज वह लापरवाही और आलस्य से देखता था, किसी की उसे कोई परवाह न थी, यहाँ तक कि अपना स्वादिष्ट खाना खाते हुए भी वह घिन से फुफकारता रहता था। लाखी सुबह उठकर कमरों का चक्कर काटने और कोने सूँघने लगती। सिर्फ उसे और बिल्ले को सारे घर में घूमने की इजाजत थी। इवान इवानिच को मैले दीवारी क़ागज़ वाले कमरे की

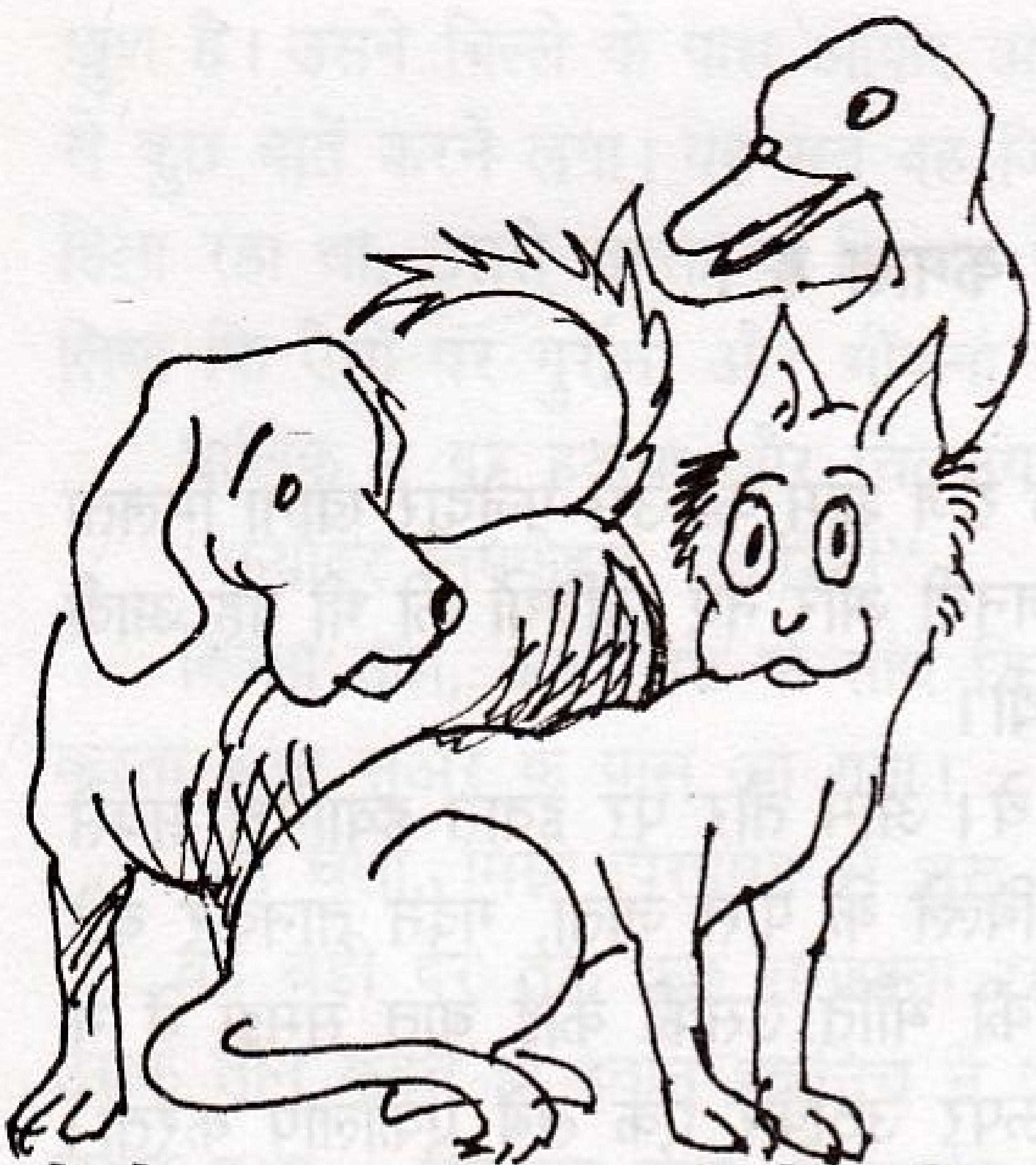

दहलीज़ लाँघने का हक़ नहीं था और सूअर अहाते में किसी कोठरी में रहता था, केवल पाठ के समय अंदर आता था। मालिक देर से उठता था। जी भर के चाय पीने के बाद वह तुरंत ही अपने तमाशों में लग जाता। रोज़ाना कमरे में दर, कोड़ा और छल्ले लाये जाते और रोजाना प्रायः वही सब दोहराया जाता। पाठ तीन-चार घंटे चलता। कभी-कभी तो इसके बाद फ़्योदर तिमफ़ेइच यों लड़खड़ाता, जैसे कि नशे में हो, इवान इवानिच अपनी चोंच खोलकर हाँफता, मालिक का चेहरा लाल सुर्ख हो जाता और उसके माथे से पसीना पोंछे न पोंछा जाता। इन पाठों और खाने की बदौलत दिन तो बड़े रोचक रहते, पर शाम को लाखी ऊबती रहती। आम तौर पर शाम को मालिक हंस और बिल्ले को लेकर चला जाता था। अकेली रह जाने पर मौसी अपने गद्दे पर लेट जाती और उदास होने लगती... उस पर अनजाने ही धीरे-धीरे उदासी छा जाती थी, जैसे कमरे में अँधेरा छाता है। इसकी शुरुआत यों होती कि कुतिया का न भौंकने, न कुछ खाने या कमरों में दौड़ने का और यहाँ तक कि देखने तक को मन न करता। फिर उसकी कल्पना में दो अस्पष्ट सी आकृतियाँ प्रकट होतीं, न जाने वे कुत्ते होते या लोग, प्यारे से, अनबूझ चेहरे, उनके प्रकट होते ही मौसी दुम हिलाने लगती और उसे लगता कि उसने उन्हे कहीं देखा है, कि वह उन्हे प्यार करती थी... नींद आने लगती, तो उसे लगता कि इन आकृतियों से सरेस, छीलन और वार्निश की गँध आती है।

जब वह नए जीवन की बिल्कुल आदी हो गई और मरियल सी लेंगी के बजाय ऐसी मोटी-तगड़ी कुतिया बन गई, जिसकी अच्छी तरह देखभाल होती है, तो पाठ से पहले एक दिन मालिक ने उसे सहलाया और बोला :

"मौसी, अब कुछ काम करना चाहिए। बहुत निठल्ली बैठ लीं तुम। मैं तुम्हें कलाकार बनाना चाहता हूँ... बनोगी कलाकार ?"

और वह उसे कई चीजें सिखाने लगा। पहले पाठ में उसने पिछली टाँगों पर खड़े होना और चलना सीखा। मौसी को यह बहुत अच्छा लगा। दूसरे पाठ में उसे पिछले पंजों पर कूदकर मालिक के हाथ से चीनी की डली लेनी थी, जो वह उसके सिर के काफ़ी ऊपर हाथ में पकड़े हुए था। फिर अगले पाठों में उसने नाचना, बागडोर पर दौड़ना, बाजे के साथ आवाजें निकालना, घंटी बजाना और पिस्तौल चलाना सीखा। महीने भर बाद वह आराम से मिस्री पिरामिड में फ़्योदर तिमफ़ेइच का स्थान ले सकती थी। वह बड़ी तत्परता से सब कुछ सीखती और अपनी सफलता पर खुश थी। जीभ निकालकर बागडोर पर दौड़ना, छल्ले में कूदना और बूढ़े फ़्योदर तिमफ़ेइच की सवारी करना इस सब में उसे बड़ा मजा आता था। जब भी कोई तमाशा वह अच्छी तरह कर लेती, तो खुशी से ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगती, उस्ताद भी हैरान होता, खुशी से झूम उठता और कहता :

"वाह! क्या कमाल है! क्या कमाल है! तुम ज़रूर लाजवाब रहोगी, मौसी! कमाल है! "

मौसी "कमाल" शब्द की भी इतनी आदी हो गई कि हर बार जब मालिक यह शब्द कहता, तो वह उछलकर खड़ी हो जाती, इधर-उधर देखती, मानो यह उसका नाम हो।

6. बेचैनी भरी रात

मौसी ने कुत्तों का सपना देखा कि जमादार लम्बे डंडे वाला झाड़ू लिए उसका पीछा कर रहा है और डर के मारे उसकी आँख खुल गई।

अँधेरे कमरे में सन्नाटा था और बहुत उमस थी। पिस्सू काट रहे थे। मौसी को पहले कभी भी अँधेरे से डर नहीं लगा था, अब न जाने क्यों वह भयभीत हो उठी थी और भौंकने का मन हो रहा था। पास के कमरे में मालिक ने जोर की उसांस भरी,

फिर थोड़ी देर बाद सूअर अपनी कोठरी में घुरघुराया और फिर से सन्नाटा छा गया। खाने की बात सोचो, तो मन को चैन मिलता है, सो मौसी यह सोचने लगी कि कैसे उसने आज फ़्योदर तिमफ़ेइच के खाने में से मुर्गी की टाँग चुरा ली थी और बैठक में अल्मारी और दीवार के बीच छिपा दी थी, जहाँ ढेर सारी धूल और मकड़ी का जाला है। अच्छा हो, जाकर देख आए : वह टाँग सही-सलामत है कि नहीं? हो सकता है, मालिक को वह मिल गई हो और वह उसे खा गया हो। पर सुबह होने से पहले वह कमरे से बाहर नहीं निकल सकती – ऐसा यहाँ का नियम है। मौसी ने आँखें मूँद लीं, ताकि जल्दी सो जाए। वह अपने अनुभव से जानती थी कि जितनी जल्दी सो जाओ, उतनी ही जल्दी सुबह हो जाती है। पर अचानक उससे थोड़ी ही दूर कहीं अजीब सी चीख हुई, जिससे वह काँप उठी और चारों पैरों पर खड़ी हो गई। यह इवान इवानिच चीखा था, पर उसकी चीख हमेशा की तरह बक्की की विश्वास भरी चीख नहीं थी, यह तो कोई तीखी, डरावनी, अस्वाभाविक चीख थी, जैसे फाटक खोले जाने पर चरमराता है। अँधेरे में मौसी को न कुछ दिखा, न समझ आया, उसका डर और भी ज्यादा बढ़ गया और वह धीरे से गुर्राई।

कुछ समय बीता, इतना ही जितना अच्छी हड्डी को चिचोड़ने के लिए चाहिए; चीख़ फिर नहीं सुनाई दी। मौसी धीरे-धीरे निश्चिंत हो गई और ऊँघने लगी। उसे सपने में दो बड़े, काले-काले कुत्ते दिखे, जिनके पुट्ठों और बगलों पर पिछले साल के बालों के गुच्छे थे; वे लकड़ी के बड़े से टब में से गंदले पानी में मिल ली जूठन खा रहे थे। टब में से सफेद भाप उठ रही थी और जायकेदार गंध आ रही थी; कभी-कभी कुत्ते मुड़कर उसकी ओर देखते, खींसे निपोड़ते और गुर्राते : "तुझे तो नहीं देंगे!" पर घर में से भेड़ की खाल का ओवरकोट पहने जमादार निकला और उसने चाबुक से उन्हें भगा दिया; तब मौसी टब के पास गई और खाने लगी, पर जैसे ही जमादार फाटक से बाहर गया, दोनों काले कुत्ते गुर्राते हुए उस पर टूट पड़े, अचानक फिर तीखी चीख़ सुनाई दी।

"कैं-कैं-कैं !" इवान इवानिच चिल्लाया।

मौसी जाग गई, उछली और गद्दे पर खड़ी-खड़ी ही हूकने लगे। उसे लग रहा था

कि यह इवान इवानिच नहीं कोई दूसरा, बाहर का कोई चिल्ला रहा है। कोठरी में भी सूअर फिर से घुरघुराया।

जूतों के घिसटने की आवाज सुनाई दी और गाउन पहने, हाथ में मोमबत्ती पकड़े मालिक अंदर आया।

टिमटिमाती रोशनी मैले दीवारी कागज़ और छत पर नाचने लगी और उसने अँधेरे को भगा दिया। मौसी ने देखा कि कमरे में कोई बेगाना नहीं है। इवान इवानिच फ़र्श पर बैठा था, सो नहीं रहा था। उसके पंख फैले हुए थे और चोंच खुली थी, उसकी शक्ल-सूरत से लगता था मानो वह बहुत थक गया हो और उसे प्यास लगी हो। बूढ़ा फ़्योदर तिमफ़ेइच भी नहीं सो रहा था। हो न हो, वह भी चीख से जाग गया होगा।

"इवान इवानिच, क्या हुआ तुम्हें?" मालिक ने हंस से पूछा। "क्यों चीख रहे हो? बीमार हो क्या?"

हंस चुप था। मालिक ने उसकी गर्दन और पीठ सहलाई और बोला :

"कैसा सनकी है भई तू। खुद भी नहीं सो रहा, दूसरों को भी नहीं सोने देता।

मालिक चला गया, अपने साथ रोशनी ले गया, और फिर से अँधेरा घिर आया। मौसी को डर लग रहा था। हंस चीख नहीं रहा था, पर उसे फिर यह लगा कि अंधेरे में कोई बेगाना खड़ा है। सबसे डरावनी बात तो यह थी कि इस बेगाने को काटा नहीं जा सकता था, क्योंकि वह अदृश्य था और उसकी कोई आकृति न थी। न जाने उसे क्यों यह ख्याल आ रहा था कि आज रात को जरूर कोई बुरी बात होगी। फ़्योदर तिमफ़ेइच भी शान्त नहीं था। मौसी को सुनाई दे रहा था कि कैसे वह अपने गद्दे पर करवटें बदल रहा है, जम्हाइयाँ ले रहा है और सिर झटक रहा है।

बाहर कहीं किसी ने फाटक खटखटाया और कोठरी में सूअर घुरघुराया। मौसी किकियाने लगी, अगली टाँगें सामने बढ़ा दीं और उनपर सिर रख लिया। फाटक पर हुई खटखट, न जाने क्यों सो न रहे सूअर की घुरघुराहट, यह अँधेरा और सन्नाटा – इस सबमें उसे वैसा ही कुछ उदासी भरा और भयावह लग रहा था, जैसे इवान इवानिच की चीख़ में था। सब कुछ बेचैन, परेशान था। क्यों? कौन है यह बेगाना, जो

दिखाई नहीं देता? मौसी के पास क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिंगारियाँ चमकीं। उनकी सारी जान-पहचान के दौरान पहली बार फ़्योदर तिमफ़ेइच मौसी के पास आ बैठा था। उसे क्या चाहिए? मौसी ने उसका पँजा चाटा और यह पूछे बिना कि वह क्यों आया है, हौले से, तरह-तरह की आवाज़ निकालते हुए हूकने लगी।

"कैं-कैं!" इवान इवानिच चीख़ा। "कैं-कैं!"

फिर से दरवाजा खुला और मोमबत्ती लिए मालिक अंदर आया। हंस पहले जैसी मुद्रा में ही चोंच खोले, पंख फैलाये बैठा था। उसकी आँखें बंद थीं।

"इवान इवानिच!" मालिक ने आवाज दी।

हंस हिला-डुला नहीं। मालिक उसके सामने फर्श पर बैठ गया, पल भर चुपचाप देखता रहा और बोलाः

"इवान इवानिच! क्या हुआ? मर रहा है तू क्या? ओह, अब मुझे याद आया," उसने अपना सिर पकड़ लिया। "मुझे पता है, यह सब क्यों हो रहा है। आज तू घोड़े के पैर तले आ गया था न, इसीलिए ! हे भगवान ! हे भगवान !"

मौसी की समझ में नहीं आ रहा था कि मालिक क्या कर रहा है। पर उसके चेहरे से वह देख रही थी कि उसे किसी बहुत ही बुरी बात होने की आशंका है। उसने अँधेरी खिड़की की ओर थूथनी बढ़ाई। उसे लग रहा था कि उसमें से कोई बेगाना झाँक रहा है, और वह हूकने लगी।

"वह मर रहा है, मौसी !" मालिक ने कहा और हाथ ऊपर को उठाकर झटके। "हाँ, हाँ मर रहा है। तुम्हारे कमरे में मौत आ गयी है। क्या करें हम?"

मालिक का चेहरा पीला पड़ गया था। वह घबराया हुआ था। गहरी साँसे भरते और सिर हिलाते हुए वह अपने सोने के कमरे में चला गया। मौसी को अँधेरे में रहते डर लग रहा था, सो वह भी उसके पीछे चल दी। पलंग पर बैठकर मालिक ने कई बार कहा :

"हे भगवान, क्या करें?"

मौसी उसके पैरों के पास चक्कर काट रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसका मन इतना उदास क्यों है, क्यों सब इतने परेशान हो रहे हैं। यह सब

समझने की कोशिश में वह मालिक की हरकत को ग़ौर से देख रही थी। फ़्योदर तिमफ़ेइच विरले ही कभी अपना गद्दा छोड़ता था। अब वह मालिक के कमरे में आ गया और उसके पैरों के पास लोटने लगा। वह रह-रह कर यों सिर झटकता,मानो उसमें से कोई बुरा विचार निकाल डालना चाहता हो, और पलंग के नीचे यों झाँक रहा था जैसे कि वहाँ कुछ हो। मालिक ने रकाबी ली, कमरे में लगे हाथ धोने के छोटे से ड्रम में से पानी उसमें डाला और फिर से हंस के पास गया।

"इवान इवानिच, लो, पी लो," उसके कमरे में रकाबी रखते हुए उसने लाड़ से कहा। "पी ले, भैया।"

पर इवान इवानिच हिल-डुल नहीं रहा था और न ही आँखें खोल रहा था। मालिक ने उसका सिर रकाबी पर झुकाया और चोंच पानी में डाली, पर हंस नहीं पी रहा था। उसने पंख और भी फैला दिए और उसका सिर रकाबी पर रखा रह गया।

"नहीं अब कुछ नहीं किया जा सकता!" मालिक ने उसांस ली। "सब खत्म हो गया। गया इवान इवानिच!"

और उसके गालों पर चमकीली बूँदें नीचे ढरकने लगीं, वैसी ही बूंदें, जैसी बारिश के समय खिड़कियों पर होती है। मौसी और फ़्योदर तिमफ़ेइच कुछ नहीं समझ पा रहे थे, मालिक से सटे जा रहे थे और भयभीत से हंस को देख रहे थे।

"बेचारा इवान इवानिच !" ठंडी साँस भरते हुए मालिक कह रहा था। "मैं तो सोच रहा था कि बसंत में तुझे दाचा पर ले जाऊँगा और हरी-हरी घास पर तेरे साथ घूमूँगा। मेरे प्यारे जानवर, मेरे अच्छे साथी, तू अब नहीं रहा! तेरे बिना मैं क्या करूँगा?

मौसी को लग रहा था कि उसके साथ भी ऐसा ही होगा, यानी वह भी ऐसे ही न जाने क्यों आँखें बंद कर लेगी, टाँगें फैला देगी, मुँह खोल लेगी और सब भयभीत हो उसे देखेंगे। प्रत्यक्षतः फ़्योदर तिमफ़ेइच के दिमाग़ में भी ऐसे ही विचार घूम रहे थे। बूढ़ा बिल्ला इससे पहले कभी भी इतना मायूस और निराश नजर नहीं आया था।

पौ फट रही थी। छोटे कमरे में अब वह अदृश्य बेगाना नहीं था, जिससे मौसी

को इतना डर लग रहा था। जब बिल्कुल उजाला हो गया, तो जमादार आया, हंस के पंजे पकड़कर उसे कहीं ले गया। थोड़ी देर बाद बुढ़िया आई और टब ले गई।

मौसी बैठक में गई और अल्मारी के पीछे झाँककर देखा : मालिक ने मुर्गी की टाँग नहीं खाई थी, वह अपनी जगह पर ही, जाले और धूल में पड़ी हुई थी। पर मौसी का मन उखड़ा हुआ था, उसे रोना आ रहा था। उसने टाँग को सूँघा भी नहीं, सोफ़े तले जाकर बैठ गई और पतली सी आवाज़ में किकियाने लगी।

7. और तमाशा फेल हो गया

एक शाम को मालिक मैले दीवारी कागज वाले कमरे में आया और हाथ रगड़ते हुए बोला :

"अच्छा जी... "

वह और कुछ कहना चाहता था, पर कहे बिना ही बाहर चला गया। मौसी पाठों के दौरान उसके चेहरे और लहजे के उतार चढ़ाव को समझना सीख गई थी, सो वह जान गई कि वह उत्तेजित और चिंतित है, लगता है, गुस्से में भी है। थोड़ी देर बाद वह लौटा और बोला :

"आज मैं मौसी और फ़्योदर तिमफ़ेइच को अपने साथ ले जाऊँगा। मिस्री पिरामिड में मौसी आज इवान इवानिच का स्थान लेगी। ओफ़, क्या है यह सब ! कुछ तैयार नहीं, सीखा नहीं गया, रिहर्सलें कम हुई हैं ! बदनाम हो जाएँगे, तमाशा फ़ेल हो जाएगा!"

वह फिर से बाहर चला गया और मिनट भर बाद ही फ़र का ओवरकोट और ऊँचा टोप पहने लौट आया। बिल्ले के पास जाकर उसने अगली टाँगों से उसे पकड़ा और उठाकर अपने ओवरकोट तले छाती पर चिपका लिया। फ़्योदर तिमफ़ेइच इस सबसे बिल्कुल उदासीन लगता था, यहाँ तक कि उसने आँखें भी नहीं खोलीं। प्रत्यक्षतः उसके लिए सब बराबर था : वह लेटा रहे या उसे टाँगें पकड़कर उठा लिया जाए,

गद्दे पर लेटा रहे या मालिक की छाती पर ओवरकोट तले दुबका रहे।

"मौसी, चलो," मालिक ने कहा।

कुछ भी समझे बिना और दुम हिलाते हुए मौसी उसके पीछे चल दी। पल भर बाद ही वह स्लेज गाड़ी में मालिक के पावों में बैठी थी और सुन रही थी कि कैसे वह ठंड से सिकुड़ता हुआ और घबराता हुआ बुदबुदा रहा था :

"बदनाम हो जाएँगे! तमाशा फ़ेल हो जाएगा!"

स्लेज गाड़ी एक बहुत बड़े, अजीब से मकान के पास रुकी, जो औंधे पड़े डोंगे जैसा था। उसमें शीशे के तीन दरवाजे थे, जो दर्जन भर बत्तियों से जगमगा रहे थे। दरवाजे शोर करते हुए खुलते और मुँहों की तरह वहाँ आ-जा रहे लोगों को निगल जाते। यहाँ लोग बहुत थे, कई घोड़े आकर रुक रहे थे, पर कुत्ते कहीं नजर न आते थे।

मालिक ने मौसी को उठाया और ओवरकोट के नीचे घुसेड़ लिया, जहाँ फ़्योदर तिमफ़ेइच पहले से ही बैठा हुआ था। वहाँ अँधेरा और उमस थी, पर गरमाहट भी। क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिंगारियाँ चमकीं–कुतिया के ठंडे, सख़्त पँजों से परेशान होकर बिल्ले ने आँखें खोली थीं। मौसी ने उसका कान चाटा,

आराम से बैठने की फ़िक्र में वह कुलबुलाने लगी, बिल्ले को अपने ठंडे पँजों तले दबा दिया, अनजाने में सिर ओवरकोट के बाहर निकाल लिया, पर तुरंत ही गुर्राई और फिर अंदर घुस गई। उसे लगा उसने एक विशाल कमरा देखा है, जिसमें बहुत कम रोशनी है। कमरा अजीब-अजीब से भयानक जीवों से भरा हुआ था; कमरे के दोनों ओर बाड़ों-पिंजड़ों के पीछे से डरावने थूथने दिख रहे थे : घोड़ों के, सींगों वाले, लमकन्ने और एक बहुत ही बड़ा, मोटा थूथना, जिसपर नाक की जगह पूँछ थी और मुँह से दो चिचोड़ी हुई हड्डियाँ निकली हुई थीं।

बिल्ले ने मौसी तले फटी-फटी आवाज़ में म्याऊँ की, पर तभी ओवरकोट खुल गया, मालिक ने कहा "हप !" और मौसी तथा फ़्योदर तिमफेइच नीचे कूद गए। वे अब एक छोटे से कमरे में थे, जिसकी मटमैली सी दीवारें लकड़ी के पटरों की बनी

हुई थीं। यहाँ एक छोटी सी शीशे वाली मेज, एक स्टूल और कोनों में टँगे कपड़ों के अलावा और कुछ भी नहीं था। लैम्प या मोमबत्ती की जगह पंखेनुमा तेज बत्ती जल रही थी, जो दीवार में गड़ी एक नली पर लगी हुई थी। फ़्योदर तिमफ़ेइच ने अपने रोयें चाटे, जो मौसी तले दब गए थे और जाकर स्टूल के नीचे लेट गया। अभी भी घबराते और हाथ रगड़ते हुए मालिक कपड़े उतारने लगा... उसने सिर्फ कोट या ओवर कोट ही नहीं उतारा, बल्कि इस तरह कपड़े उतारे जैसे कि वह घर पर कम्बल तले लेटने से पहले उतारता था, यानी वह सिर्फ अंतरीय पहने रहा – पूरी बाँहों की बनियान और तंग पायजामा। फिर वह स्टूल पर बैठ गया और शीशे में देखते हुए अपने आप को न जाने क्या-क्या करने लगा – देखकर आश्चर्य होता था। सबसे पहले उसने सिर पर नकली बालों का बिग पहना, जिसके बीचोंबीच माँग थी और दोनों ओर बालों से सींग बने हुए थे, फिर उसने चेहरे पर सफेद सा कुछ पोत लिया और सफेद रंग के ऊपर भौंहें, मूँछे और लाली बनाई। इतने में ही उसके तमाशे खत्म नहीं हुए। चेहरे और गर्दन पर लीप-पोतकर वह बहुत ही अजीबोगरीब पोशाक पहनने लगा। मौसी ने पहले कभी भी न घर पर और न ही सड़क पर किसी को ऐसे कपड़े पहने देखा था। कल्पना कीजिए बोरे जैसी खुली पतलून की, जो बड़े-बड़े फूलोंवाले छींट के कपड़े की बनी हुई थी। ऐसा कपड़ा शहरों के आम घरों में पर्दों के लिए और फ़र्नीचर पर चढ़ाने के काम आता है। पतलून बगलों तक ऊँची थी; उसका एक पाँयचा कत्थई छींट का था और दूसरा चमकीली पीली छींट का। पतलून में समाकर मालिक ने ऊपर से छींट का सिंघाड़ेदार कालर वाला कुर्ता पहना, जिसकी पीठ पर सुनहरा सितारा बना हुआ था; अलग-अलग रंग के मोजे पहने और फिर हरी जूतियाँ।

मौसी तो चकाचौंध हो गई। सफेद मुँह वाली बोरे जैसी आकृति से मालिक की गंध आती थी, उसकी आवाज भी जानी-पहचानी, मालिक जैसी ही थी, मगर ऐसे क्षण भी आते जब मौसी के मन में संदेह उठने लगता। तब उसका जी होता इस भड़कीली आकृति से दूर भागे और भौंकने लगे। नई जगह, पंखेनुमा बत्ती, नई गंधें, मालिक के साथ हुआ कायाकल्प–इस सबसे उसके मन में अजीब सा डर समा रहा था और उसे लग रहा था कि जरूर उसका सामना किसी डरावने जीव से होगा, जैसे कि नाक

की जगह दुम वाला मोटा थूथना। ऊपर से दीवार के पीछे दूर कहीं वह बैंड-बाजा बज रहा था, जिसे मौसी सह नहीं सकती थी और कभी-कभी अनबूझ दहाड़ भी सुनाई देती। बस फ्योदर तिमफेइच को एकदम निश्चिंत पड़े देखकर ही उसका थोड़ा ढाँढ़स बँध रहा था। वह मजे में स्टूल के नीचे लेटा ऊंघ रहा था, जब स्टूल हिलता तब भी वह आँखें नहीं खोलता था। सफेद वास्कट और लम्बा काला कोट पहने एक आदमी ने अंदर झाँककर देखा और कहा :

"अभी मिस अराबेला जा रही हैं। उसके बाद आपकी बारी है।"

मालिक ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने मेज के नीचे से बड़ा अटैची निकाला और बैठकर इंतजार करने लगा। उसके हाथों और होंठों से साफ लग रहा था कि वह घबरा रहा है, मौसी उसकी काँपती साँस सुन रही थी।

"मि. जार्ज, चलिए!" दरवाजे के पीछे से किसी ने आवाज दी।

मालिक उठा, छाती पर तीन बार सलीब का निशान बनाया, फिर स्टूल के नीचे से बिल्ले को निकाला और अटैची में घुसेड़ दिया।

"चलो, मौसी!" मालिक ने हौले से कहा।

मौसी कुछ नहीं समझी, मालिक के पास आ गई; उसने मौसी का सिर चूमा

और उसे फ़्योदर तिमफ़ेइच के पास रख दिया। और फिर अँधेरा छा गया... मौसी बिल्ले को दबा रही थी, अटैची को खरोंच रही थी, डर के मारे उसके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी, अटैची यों हिल रहा था, मानो लहरों पर उछल रहा हो. ..

"लो जी मैं आ गया!" मालिक जोर से चिल्लाया। "लो जी मैं आ गया!"

मौसी ने महसूस किया कि इस चीख़ के बाद अटैची किसी सख़्त चीज से टकराया और फिर उसका हिलना-डुलना बंद हो गया। ज़ोर से चिंघाड़ने की आवाज आयी : किसी को थपथपाया जा रहा था और यह कोई, शायद नाक की जगह दुम वाला थूथना इतनी जोर से चिंघाड़ रहा था कि अटैची का ताला खड़खड़ा उठा। चिंघाड़ के जवाब में मालिक बारीक,तीखी आवाज़ में हंसा; घर पर वह कभी भी ऐसे नहीं हंसता था।

"हा-हा-हा!" चिंघाड़ को दबाने की कोशिश करते हुए वह चिल्लाया।"साहेबान

मेहरबान! मैं सीधा स्टेशन से आ रहा हूँ। मेरी नानी इस दुनिया से चलती बनी है और मेरे लिए यह एक बक्सा छोड़ गई है! बड़ा भारी है, हो न हो सोने से भरा होगा.. हा-हा-हा! अभी देखते हैं कितने लाख हैं इसमें!"

अटैची का ताला चटका। मौसी की आँखें तेज रोशनी से चुंधिया गईं; वह उछलकर अटैची से बाहर निकली, शोर-गुल से बौखला गई और बड़ी तेजी से मालिक के इर्द-गिर्द दौड़ने लगी, जोर-जोर से भौंकने लगी।

"धत् तेरे की!" मालिक चिल्लाया। "फ़्योदर तिमफ़ेइच! मौसी! आ गए मेरे प्यारे रिश्तेदार! भाड़ में जाओ तुम!"

वह पेट के बल रेत पर गिर गया, बिल्ले और मौसी को पकड़ लिया, उन्हें बाँहों में भरने, गले लगाने लगा। जब वह उसे अपने आलिंगन में कस रहा था तो मौसी ने जल्दी से एक नजर उस दुनिया पर डाली, जहाँ किस्मत उसे ले आई थी। उसकी भव्यता पर वह आश्चर्यचकित और विमुग्ध हो गई, पल भर को स्तब्ध रह गई, फिर मालिक के हाथों से निकल भागी और इन छापों के तीव्र प्रभाव में लट्टू की तरह घूमने लगी। नई दुनिया विशाल थी और तेज प्रकाश से भरपूर; जिधर भी नजर डालो, फर्श से छत तक चेहरे ही चेहरे थे, चेहरे ही चेहरे बस और कुछ नहीं।

"मौसी, तशरीफ़ रखो!" मालिक चिल्लाया।

मौसी को याद था कि इसका क्या अर्थ है। वह तुरंत उछल कर कुर्सी पर चढ़कर बैठ गई। उसने मालिक की ओर देखा। उसकी आँखें सदा की तरह गम्भीर और स्नेह भरी थीं, किन्तु चेहरा और खास तौर पर मुँह और दाँत चौड़ी, जड़ मुस्कान से विकृत थे। वह ठहाके मारकर हंस रहा था, उछल-कूद रहा था, कंधे बिचका रहा था और यह दिखा रहा था कि हजारों लोगों की उपस्थिति में उसे बड़ा मजा आ रहा है। मौसी ने उसके उल्लास पर विश्वास कर लिया, सहसा अपने रोम-रोम से उसे यह आभास हुआ कि ये हजारों चेहरे उसे देख रहें हैं, उसने लोमड़ी जैसी अपनी थूथनी ऊपर उठाई और खुशी से किकियाने लगी।

"मौसी आप यहाँ बैठिये," मालिक ने कहा। "हम फ़्योदर तिमफ़ेइच के साथ थोड़ा नाच लें।"

फ़्योदर तिमफ़ेइच उदासीनता से इधर-उधर देखता हुआ इस प्रतीक्षा में खड़ा था कि कब उसे ये बेवकूफी भरी हरकतें करने को कहा जाएगा। वह अनमना सा, लापरवाही से नाच रहा था, उसकी गतियों, उसकी दुम और मूँछों से यह साफ दिख रहा था कि वह इस भीड़ और सारी रौनक को तुच्छ मानता था, मालिक और उसका अपना तमाशा उसके लिए छिछोरा था... अपने हिस्से का नाच नाचकर उसने जम्हाई ली और बैठ गया। मालिक बोला :

"हाँ, तो मौसी, चलो, हम पहले गाएँगे और फिर नाचेंगे। अच्छा?"

उसने जेब से बाँसुरी निकाली और बजाने लगा। मौसी संगीत नहीं सह सकती थी, वह बेचैनी से कुलबुलाने लगी और हूकने लगी। चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट और कोलाहल सुनाई दिया। मालिक ने झुककर सलाम किया और जब सब शान्त हो गय. तो फिर से बांसुरी बजाने लगा... बांसुरी बहुत ऊँची तान में बज रही थी, जब ऊपर कहीं दर्शकों में किसी ने आश्चर्य के साथ जोर से आह भरी।"

"बापू!" बाल स्वर चिल्लाया। "यह तो लाखी है!"

"लाखी है ही!" नशे से काँपते पुरुष स्वर ने हामी भरी। "हाँ, लाखी है! फ़ेद्युश्का, खुदा क़ी मार पड़े, यह तो लाखी ही है ! पुच-पुच-पुच!"

गैलरी में किसी ने सीटी बजाई, और दो स्वर, एक बच्चे का और एक पुरुष का जोर-जोर से पुकारने लगे :

"लाखी! लाखी!"

मौसी ठिठक गई, उसने उधर देखा जिधर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। दो चेहरे : एक बालोंवाला, नशे में मुस्कराता हुआ और दूसरा- गोल-मटोल, लाल और सहमा सा-उसकी आँखों में वैसे ही चौंध गए जैसे पहले तेज प्रकाश चौंधा था।

उसे याद हो आया, वह कुर्सी से गिर पड़ी, रेत पर लोटने लगी फिर उठी और खुशी से किकियाती हुई इन चेहरों की ओर दौड़ चली। कर्णभेदी कोलाहल हुआ, जिसमें जोर-जोर की सीटियाँ और एक बच्चे की तीखी चीख़ साफ सुनाई दे रही थीं :

"लाखी! लाखी!"

मौसी ने उछलकर रिंग की मुंडेर पार की, फिर किसी के कंधे के ऊपर से होती

हुए बाक्स में पहुँच गई; अगली कतार में पहुँचने के लिए ऊँची दीवार लाँघनी चाहिए थी : मौसी कूदी, पर ऊपर तक न पहुँच पाई, दीवार पर नीचे फिसलने लगी। फिर वह एक हाथ से दूसरे हाथ में जाने लगी, कई हाथ, चेहरे चाटती हुई ऊपर ही ऊपर बढ़ती गई और आख़िर गैलरी में पहुँच गई।

आधे घंटे बाद लाखी सड़क पर उन लोगों के पीछे जा रही थी, जिनसे सरेस और वार्निश की गंध आ रही थी। लुका अलेक्सान्द्रिच लड़खड़ा रहा था, पर उसे इतना अनुभव था कि उसके पाँव उसे अपने आप ही नाली से दूर-दूर लिए जा रहे थे।

''पाप के गरत में लोटा मेरे गरभ में...'' वह बड़बड़ा रहा था। ''अरी लाखी, तू तो बस एक भूल है। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौड़ी का बढ़ई।''

उसके साथ-साथ फ़ेद्युश्का बाप का टोप पहने चल रहा था। लाखी उनकी पीठों को देख रही थी और उसे लग रहा था कि वह न जाने कब से उनके पीछे चल रही है और खुश हो रही है कि जीवन का क्रम पल भर को भी नहीं टूटा।

मैले दीवारी कागज वाला कमरा, हंस, फ़्योदर तिमफ़ेइच, स्वादिष्ट खाना और सरकस – यह सब उसे याद आया, पर अब यह एक लंबा, उलझा-फलझा सपना ही लग रहा था।

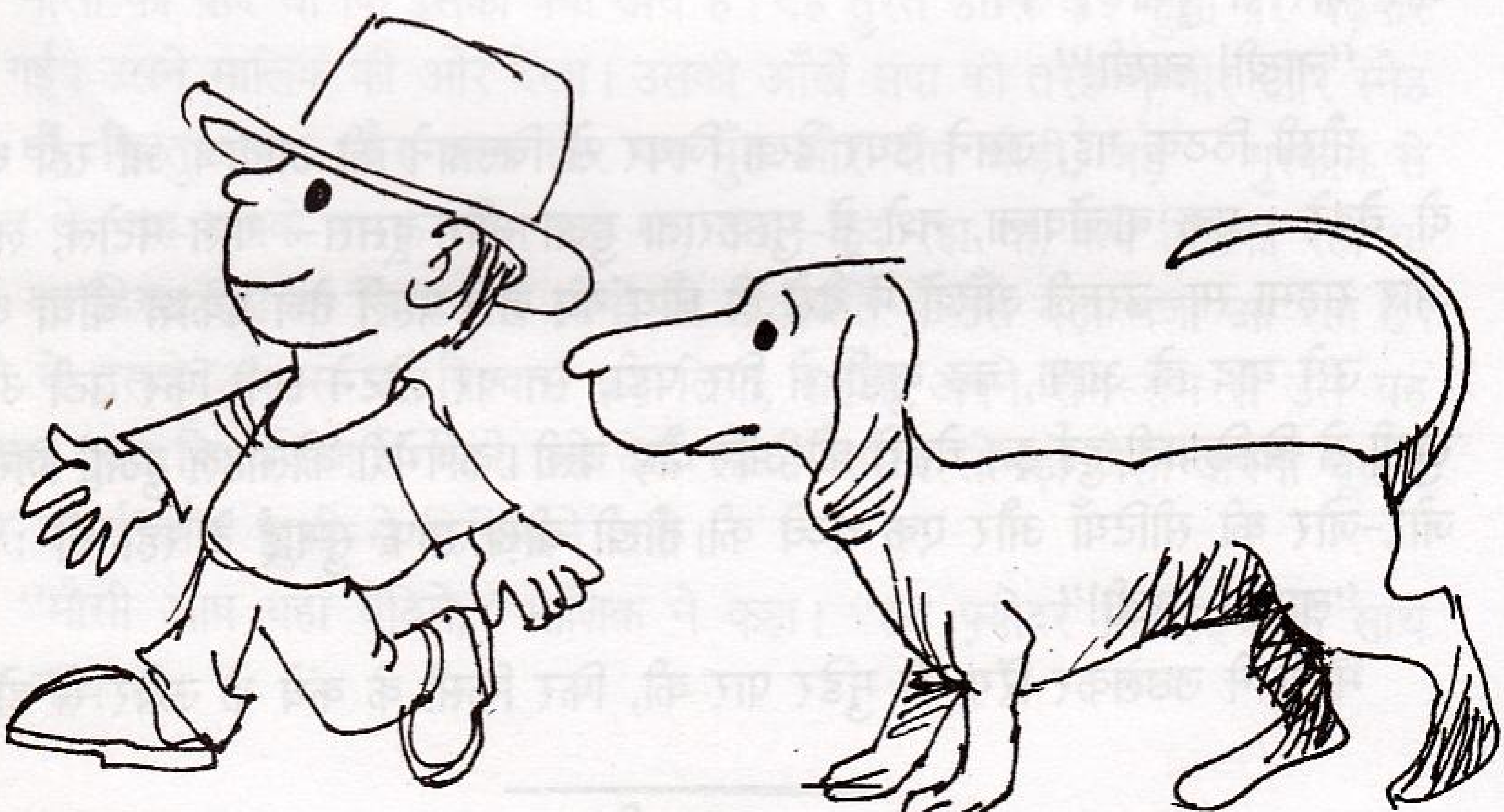

अन्तोन चेख़व

अनुराग ट्रस्ट